रिकॉर्ड :– आज नहीं तो कल.... ॐ पिताश्री 10/7/64

ओम् शांति। बच्चों को बाप द्वारा अपने घर का पता चला है। कौन बच्चे और कौन बाप? निराकार बच्चे और निराकार बाप। अब निराकार बच्चों को अर्थात् आत्माओं को प०पि०प० द्वारा घर का रास्ता मिला है और बाप कहते हैं इस पतित दुनिया में बहुत दुख है। कलियुग को पतित दुनिया, सतयुग को पावन दुनिया कहा जाता है; परन्तु पतित दुनिया से पावन कब और कैसे बनती है, यह किसको पता नहीं। गोया बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। तुम बच्चों की अब बनी है पवित्र, स्वच्छ बुद्धि। स्वच्छ बुद्धि के अगेन्स्ट मलेच्छ बुद्धि कहा जाता है। स्वच्छ है ईश्वरीय बुद्धि। तुम जानते हो, हमको ईश्वरीय बुद्धि वा ईश्वरीय मत मिल रही है। बाप कहते हैं– बच्चे, अब घर को याद करो, घर चलना है। पुरानी दुनिया को छोड़ो। अब रात पूरी होनी है, दिन आ गया है। अब दुःख में, अंधियारे में ठोकरे खाने का समय पूरा होता है। अब सभी को बाप का पैगाम देना है। ऐसे कोई यूनिवर्सिटी नहीं देखेंगे जो एक जगह पढ़ावे और कहे, यह फिर बाहर वाले भी सुनेंगे। यहाँ पढ़ाने वाला ही एक है। जो पढ़ते हैं वो फिर और को पढ़ाते हैं। और स्कूलों आदि में तो अनेक पढ़ाने वाले होते हैं। ग्रंथ–बाईबल आदि कितने पढ़ते होंगे; परन्तु बाईबल पहले–2 किसने पढ़ाया? क्राइस्ट ने क्रिश्चियन धर्म स्थापन करने लिए पढ़ाया। तो यह देवी–देवता धर्म स्थापना अर्थ भी पढ़ाने वाला एक है और बहुत सहज है। कोई से भी पूछना है– तुम्हारा रचता कौन है? तुम प०पि०प० किसको कहते हो? बाप को याद करते हो? बाप का परिचय देने से फिर 84 जन्मों का चक्र भी बुद्धि में आता है। अच्छा, बताओ, आत्मा पुनर्जन्म लेती है वा नहीं? ....मनुष्य कहते हैं, 84 लाख बार पुनर्जन्म लेती है। क्या परमात्मा भी 84 लाख बार जन्म लेते होंगे? परमात्मा तो नाम–रूप से न्यारा, जन्म–मरण रहित है। नाम–रूप न हो तो देश–काल भी न ठहरे, नाम–रूप है तब तो परमधाम कहा जाता है। परमधाम अर्थात वाणी से परे रहने वाला है। तो ज़रूर उनका नाम भी है, रूप भी है। शिवलिंग का रूप दिखलाते हैं ना! क्या प०पि०प० भी 84 लाख पुनर्जन्म लेते हैं? तुम इनको बिल्कुल राँग बताए सकते हो। फिर कह देते– आत्मा सो परमात्मा, आत्मा निर्लेप है। निर्लेप का तो अर्थ है नहीं। अच्छे वा बुरे कर्मों अनुसार पुनर्जन्म आत्मा ही तो लेती है ना! ज़रूर लेप–छेप लगता है। ये बातें तुम बच्चों के अंदर रात–दिन रहनी चाहिए। अगर कोई सर्विस नहीं कर सकते तो ऊँच पद भी नहीं पाए सकते। पहले–2 तो अल्फ समझाना है। एक अल्फ को याद करो बाकी सब भूल जाओ। अल्फ एक प०पि०प० हैं। तो बे, पे, ते भी परमात्मा है? वह तो सब रचना है ना! अल्फ एक परमात्मा को कहा जाता है। इसका रूप भी ज्योतिर्लिंगम, अल्फ मिसल है। तिलक भी .... मिसल देते हैं। यह तो कोई को पता नहीं है। कोई भी मनुष्य नहीं, जो कहे कि प०पि०प० का रूप तो आत्मा जैसा ही है। आत्मा के लिए कहते हैं, स्टार मिसल सफेद है, दूर से बहुत छोटा दिखाई पड़ता है तो आत्मा ऐसे ही स्टार है, जिसका बहुत साक्षात्कार भी होता है। आत्मा हर एक में है, हर एक पुनर्जन्म भी लेते हैं। बाप को सभी याद करते हैं। भक्त बुलाते हैं– भगवान आओ अथवा भक्त कहते हैं– भगवान से मिलें। शरीर साथ तो मिल न सके। कहते हैं, फलाना स्वर्ग सिधारा। तो यह आत्मा जाती है ना! तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते, हम तुमको समझाते हैं। और कोई कह न सके। 84 लाख जन्मों की बातें तो कोई को याद न रहे। 84 जन्म कहाँ और 84 लाख कहाँ! तो मनुष्यों में ज़रा भी ज्ञान न है। नाम तो बड़े–2 विद्वान–पंडित हैं। अभी बाप कहते हैं, जो कुछ पढ़े हो, वो काम का न है। अब तुम सिर्फ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। क्राइस्ट को क्यों याद करते हो? क्या इनके पास जाने लिए? ज़रूर क्राइस्ट यहाँ आवेगा। आत्मा और उनके शरीर को याद करते हैं। जानते हैं, क्राइस्ट फिर से

(आ)वेगा क्रिश्चियन धर्म स्था(पन) करने। क्राइस्ट तो (ज़रूर) वो ही चाहिए जिसको क्रास पर चढ़ाया। वो आए थे धर्म स्थापन अर्थ, फिर वो ही क्राइस्ट तब आवेगा जबकि क्रिश्चियन घराना नहीं होगा। कृष्ण को भी याद करते हैं, समझते हैं कृष्ण के (साथ स्वर्ग) था। तो उनको आना पड़े; परन्तु कब आवेंगे? हम याद करते हैं इससे (क्या) होगा? पतित से पावन भी तो नहीं बन सकेंगे। पतित मनुष्य तो दुखी हैं तब तो पावन बनना चाहते हैं। पावन दुनिया है निर्वाणधाम या जीवनमुक्तिधाम। आत्मा चाहती है हम वापिस जावें; क्योंकि यहाँ दुख है। बाप को कोई भी नहीं जानते। अभी तुम सन्मुख बैठे हो, तुम जानते हो, बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यहाँ नशा चढ़ता है, बाहर जाने से फिर वह नशा कम हो जाता है। माया एकदम दीवे को बुझाए देती है। छोटे–2 दीवों को माया के तूफान उड़ा देते हैं। अभी सन्मुख बैठने से तुमको नशा है– शिवबाबा ब्रह्मा तन से हमको स्वर्ग का मालिक बनाने आया है। स्वर्ग का मालिक प्रजा भी अपन को कहेगी। सब स्वर्गवासी थे, अब यहाँ हैं नर्कवासी। कोई गरीब है, कोई साहुकार है। यह कर्मों का हिसाब है। बेहद का बाप भी तुमको ऐसे कर्म सिखाते हैं, जिससे तुम स्वर्गवासी बनते जा रहे हो। भारतवासी अब नर्कवासी हैं, फिर भारतवासी ही स्वर्गवासी बनने हैं; परन्तु उसमें पद तो नम्बरवार हैं न! (मम्मा)–बाबा तो मालिक बनेंगे। पुरुषार्थ पर सारा मदार है। देखना है हम स्वर्गवासी तो बनेंगे; परन्तु किस पद पर? मम्मा–बाबा के तख्त पर बैठने लिए फॉलो करना है। बाबा सहज राजयोग सिखलाए रहे हैं। कोई को धारणा होती हो और किसको सिखलाए न सके, यह तो होता नहीं। यह तुम्हारी भूल है, बुद्धियोग ठीक न है। बात तो बड़ी सहज है– बेहद का बाप सब आत्माओं का बाप है। अगर सब (भगत), भगवान हैं तो क्या भगवान पुनर्जन्म लेते हैं? 84 लाख जन्म लेते हैं? यह तो नॉनसेंस है। बाप कहते हैं तुम तो पत्थर बुद्धि, (डल) बुद्धि हो। बरोबर हम–तुम पत्थरबुद्धि थे ना! अभी बाप ने अपना और रचना का अंत बताया है। लाखों बरस की बातें तो कोई समझा न सके। बाबा कितना सरलता से समझाते हैं तो भी पत्थरबुद्धि धारणा नहीं कर सकते। कोई तो अच्छी रीति धारणा करते हैं। बच्चों को समझाया है, बाप को याद करना है और कोई को साकार को याद न करो। आत्मा ही प०पि०प० को याद करती है। बाप कहते हैं, मैं आया हुआ हूँ, तुम सिर्फ और संग तोड़ एक मुझ बाप को याद करो। हम कोई साकार में नहीं फँसाते हैं। अपन को आत्मा समझ निराकार बाप को याद करो। अब मैं तुमको लेने आया हूँ; क्योंकि 84 का चक्र पूरा होता है। कलियुग अंत तक तुम 84 जन्म लेते हो। शास्त्रों में 84 लाख जन्म आदि–2 क्या–2 लिख दिया है। गोया शास्त्रों से ही मनुष्यों ने दुर्गति को पाया है। शास्त्र रचे हैं मनुष्यों ने। बाप तो सारे ड्रामा को जानते हैं। भारत ही 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी था। और खण्डों को सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण नहीं कहेंगे। देवताओं के सिवाए यह टाइटिल और किसको नहीं मिल सकता। और धर्म वालों को 16 कला सम्पूर्ण कह नहीं सकते। अभी भारत पर ग्रहण लगा हुआ है। ग्रहण लगने में पूरा एक कल्प लगता है। सम्पूर्ण तो पहले थे, फिर कलाएँ कमती होती गई हैं। भारत को ग्रहण लगने में 5000 वर्ष लगे हैं। त्रेता में दो कलाएँ कम होती हैं; परन्तु हम दो कला क्यों कहते हैं? क्वाटर कला कम हुई, आधा कला कम हुई, ऐसे क्यों न कहें? गोया हमको 16 कला से नीचे आना ही है। भल सुख रहता है; परन्तु कलाएँ तो कम होती जाती हैं ना! बुद्धि से काम लिया जाता है। दो कलाएँ फट से खलास (तो) नहीं होगी ना! अभी पूरा ग्रहण लगा हुआ है। अब बाप कहते हैं, देह सहित देह के संबंध आदि सब कुछ दान दो। इन सबको छोड़ो, मामेकम् याद करो। यह हैविनली गॉड फादर कहते हैं। कोई मनुष्य को हैविनली गॉड फादर कभी नहीं कहेंगे। तो बाप कहते हैं, मैं पतित शरीर में आता

हूँ, बहुत जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूँ जबकि वानप्रस्थ अवस्था होती है। वानप्रस्थ अवस्था (वाले) पास विकार का ख्याल नहीं रहता। वो घर–बार छोड़ किनारे बैठ जाते हैं। सन्यासी लोग भी माताओं को छोड़ देते हैं। माताओं ने क्या दोष किया? यहाँ तो वानप्रस्थ ऑटोमैटिकली हम सब हैं। सारी दुनिया के मनुष्य वानप्रस्थ में हैं। विनाश सामने खड़ा है। बाप सभी को पाँच विकारों की ज़जीरों से छुड़ाए साथ ले जावेंगे। तो अपन को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। हम आत्माएँ 84 जन्म का पार्ट पूरा किया, अब हम जाते हैं बाबा के पास। शरीर तो नहीं कहता है, आत्मा के लिए कहते हैं ज्योति ज्योत समाया अथवा स्वर्गवासी हुआ। अब सिर्फ बाप को याद करना है। अब सन्यासी बाप को याद नहीं करते। समझते हैं, तत्व ही परमात्मा है; परन्तु उनको याद करने से कुछ भी ताकत नहीं मिलती जो विकर्म विनाश हों और विकर्माजीत बनें और फिर बाप पास जावें। ब्रह्म अथवा तत्व है रहने का स्थान। ब्रह्म को सर्वशक्तिवान नहीं कह सकते। उनसे कोई शक्ति नहीं मिलती, जो बाप के घर वापस जाएँ। कहते हैं, हम ही ईश्वर हैं। आगे हम भी समझते थे, सब आप ही आप हैं, जिधर देखूँ उधर तू ही तू; परन्तु अब समझते हैं, वह रॉंग हो गया। बाप कहते हैं, तुम मेरे को भी पुनर्जन्म में ले आते हो। तो अब तुम बाप को जान गए हो। सारा कल्प तुम देह–अभिमानी बने हो अब देही–अभिमानी बनना है। पार्ट पूरा होता है, इसलिए बाप कहते हैं देही–अभिमानी बनो। आत्माओं से बात करते हैं। सतयुग में आत्मा–परमात्मा का ज्ञान नहीं। अभी बाप ज्ञान देते हैं। बाप आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं, एक धर्म की स्थापना कर बाकी का विनाश कराए देते हैं; इसलिए त्रिमूर्ति दिखाया है। इन द्वारा कराते हैं। खुद तो है निराकार। ऑरगंस बिगर ज्ञान कैसे दे? इसलिए कहते हैं– मुझे भी शरीर चाहिए। जिन्होंने पूरे 84 जन्म लिए हैं उन्हों को ही बाप समझाते हैं, दूसरे किसको (समझ) में न आवेगा। जिन्होंने 84 जन्म पूरे लिए हैं वे ही बनेंगे– यह भी समझने की बातें हैं। मनुष्य, मनुष्य को कब सुख दे नहीं सकता। सुख देने वाला एक ही बाप है, जिसको सुखदाता कहते हैं। दुख देती है माया। माया भी बड़ी बलवान है; इसलिए बाबा को याद करेंगे और स्वदर्शनचक्र फिराते रहेंगे तो माया का सिर कट जावेगा और फिर तुम मालिक बन जावेंगे। नॉलेज को अंदर धारण करना है। हमारे 84 जन्म अब पूरे हुए। विनाश भी सामने खड़ा है। आपस में लड़ पड़े तो अनाज उस तरफ से न आ सके। विनाश शुरू हुआ, कैलेमिटीज़ आवेंगी, आफतें आवेंगी। ड्रामा में जो है उस अनुसार चल रही है। तुम नई दुनिया के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यह दुनिया तो ज़रूर बदलनी है। बाकी वंडर यह है, जो यहाँ सुनते हैं, यहाँ से बाहर फिर जाने से ही एकदम भूल जाते हैं। न स्थूल, न सूक्ष्म। सर्विस में तत्पर रहते हैं। गवर्मेन्ट की सर्विस एक्युरेट जब करे तब ही पद भी एक्युरेट पाए सकें। कोई–2 तो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। यह है ही याद की यात्रा। अपन से पूछना है, हम कितना याद करते हैं? और तो सभी देहधारियों को याद करते हैं, यहाँ बाप कहते हैं– अशरीरी बन अशरीरी बाप को याद करो। मुझे शिक्षा देने आना पड़ता है। लौकिक संबंध की याद झट आ जाती है और बेहद के बाप के लिए भूल जाते हैं। अरे, बाप को थोड़े ही भूलना है। 5000 बरस बाद बाप आए हैं, कहते हैं– मुझे याद करो, तुम फिर भूल जाते हो। अभी तुम पीयर घर बैठे हो, फिर वह है ससुर घर। हम तुमको लायक बनाते हैं। पहले मेरे घर चलना है। मैं तुम्हारा बाप हूँ, अब घर चलना है। बाप को कितना भूल गए हैं। घर याद कराने में भी मेहनत लगती है। ब्राह्मणों के संग में रहने से याद रहती है, शूद्रों के संग गया तो याद खतम हो जावेगी, फिर बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। भल सुखी सब बनेंगे, मर्तबा भी तो चाहिए ना! दुख में भी मर्तबा है ना! बड़ा कहावना बड़ा दुख पाना– कितनी फिकरात रहती है, नींद फिट जाती है। डुकर पड़ता है, कितना दुख होता होगा। प्रजा को दुखी देख राजा को भी ज़रूर दुख होगा न! बाप कहते हैं, हमारी रचना दुखी हो रही है। इन(इन्हें) सुखधाम पहुँचाना है। अच्छा, गुडमॉर्निंग।